Raga of the Month June 2025 Raga DugamHindol

राग दुगमहिंडोल

राग दुगमहिंडोल - इस राग का सृजन पंडित सी. आर. व्यासजी ने किया है। इस रागके नामसे हमें पता चलता है की इस रागमे, मूल राग हिंडोलमे दो गांधार और दो मध्यमोंका प्रयोग किया है। इस रागमे पंचम वर्ज्य है और धैवत, निषाद स्वर शुद्ध लगते है। निषादका प्रयोग ज्यादह तर कण स्वर के रूपमे किया जाता है। वादी शुद्ध मध्यम और संवादी षड्ज है। इस रागकी जाती औडव- औडव है। इस रागका गानसमय रात्रीका तीसरा प्रहर माना गया है।

आरोह - सा ग, मं ध, नि मं ध सां। अवरोह - सां नि ध, मं ग, म ग-> सा ।

रागका मुख्य अंग इस प्रकार है - सा ग, मं ध, मं ध सां, , ध मं ध मं ग, म ग सा, ग-> सा। ध़ ध़ सा, ध, मं ग, म ग-> सा , ग-> सा, ध़ ध़ सा , ग-> सा।

आज के ऑडीओ मे हम पंडित जितेंद्र अभिषेकीजी ने गाया हुआ राग दुगमहिंडोल सुनेंगे। .

आभार - पंडित यशवंत महाले.

01-06 -2025.

Link to the list of 170+ Raga of the month articles

@ Archive of ROTM Articles https://oceanofragas.com/Raga_Of_Month_Alphabetically.aspx